जैन विद्या आंचलिक संयोजक कार्यशाला का आयोजन

अध्यात्म विद्या का ज्ञान अहंकार का नाश करता है

– युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 13 जून।

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संसति संकाय के द्वारा संपूर्ण देश में संचालित होने वाली जैन विद्या परीक्षाओं के आंचलित संयोजकों एवं केन्द्र व्यवस्थापक कार्यशाला का आयोजन आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में किया गया। इस कार्यशाला के अन्तर्गत जैन विद्या भाग 1 से 8 तक अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों का पुरस्कार सम्मान समारोह सुधर्मा सभा में आयोजित हुआ।

देश के 243 केन्द्रों से पहुंचे वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को संबोधित कराते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि सम्मान देने वाला बड़ा दाता होता है। सम्मान वही दे सकता है जिसका अहंकार पतला पड़ जाता है। अहंकार उत्तपति के 8 क्षेत्रों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि अध्यात्म विद्या का ज्ञान अहंकार को नाश करता हैं

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि सत्ता मिलने के बाद अहंकार आ जाता है। अपेक्षा इस बात की है कि सत्ता के आसन पर बैठने के बाद की नम्रता का साथ न छूटे। उन्होंने कहा कि अधिकार अहंकार का संबध है, पर अध्यात्म विद्या, जैन विद्या का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी इस संबंध को तोड़े। उन्होंने जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय के जैन विद्या विकास में उल्लेखनीय योगदान की सराहना करते हुए कहा कि जैन धर्म की सारी विद्याओं का योग जिस संस्थान में मिलता है वह जैन विश्व भारती है। युवाचार्य महाश्रमण ने विद्यार्थियों को परीक्षाओं में नकल एवं अवांछनीय तरीकों का इस्तेमाल न करने की प्रेरणा दी।

मुनि दिनेशकुमार ने ''क्यों महत्त्वपूर्ण है हमारे लिए जैन विद्या का अध्ययन' विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन विद्या का अध्ययन करने वाला अपने आप को भावित करता हुआ अनेकांत का प्रयोग करना सीख जाता है और विग्रह, कलह से दूरी बना लेता है।

समण संस्कृति संकाय के राष्ट्रीय निदेशक जिनेन्द्र कोठारी ने कहा कि जैन विद्या परीक्षाओं में 11 हजार विद्यार्थी देश एवं विदेश के 243 परीक्षा केन्द्रों पर परीक्षाएं देते हैं। उन्होंने भावी योजनाओं के बारे में कहा कि संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परीषद के द्वारा देश भर में जैन विद्या कार्यशालाओं का आयोजन किया जायेगा। देश के महानगरों के परीक्षा केन्द्रों पर सर्व सुविधायुक्त जैन दर्शन ग्रंथागार खोले जायेंगे। नोखा परीक्षा केन्द्र से समागत विद्यार्थियों ने रोचक परिसंवाद के द्वारा जैन विद्या पाठ्यक्रम की जानकारी दी।

इस मौके पर जैन विद्या पुरस्कार सम्मान समारोह के प्रायोजक मालचन्द बैंगानी के द्वारा 2007–08 के जैन विद्या भाग 1 के **प्रवेशिका प्रथम वर्ष** की प्रथम ईरा संघवी, द्वितीय गोरेगांव की रियांसी धींग, तृतीय जयंत सेठिया गंगाशहर।

प्रवेशिका द्वितीय वर्ष में प्रथम माधुरी हिरण उधना, द्वितीय पूजा पींच इस्लामपुर, तृतीय मनीश कुमार बोरड़ सुजानगढ़। **विशारद प्रथम वर्ष** में प्रथम श्रीमती कुसुम बैद छोटी

खाटू, द्वितीय श्रीमती साधना सेठिया जालना, तृतीय प्रियंका बुच्चा जोरावरपुरा (नोखा)। **विशारद द्वितीय वर्ष** में प्रथम मनीषा चौरड़िया हिन्दमोटर, द्वितीय रीना बाबेल नाथद्वारा, तृतीय सूर्यप्रकाश सामसुखा लुधियाना। **रत्न प्रथम वर्ष** में प्रथम कविता कविता सालेचा जसोल, द्वितीय सोनम गांधी चैन्नई, तृतीय तरुणा बोहरा दहिसर। **रत्न द्वितीय वर्ष** में प्रथम खुशबू गोखरू आसीन्द, द्वितीय श्रीमती तारा मर्लेचा चैन्नई, तृतीय श्रीमती कीर्ति गोलच्छा रायपुर। **रत्न तृतीय वर्ष** में प्रथम प्रमिला गेलड़ा आमेट, द्वितीय शालू जैन भिवानी, तृतीय श्रीमती सपना पारख गंगाशहर। **विज्ञ प्रथम वर्ष** में प्रथम सुश्री रक्षा मरलेचा पल्लावरम्, द्वितीय श्रीमती अनीता चौपड़ा सरदारपुरा–जोधपुर, तृतीय लाडली गादिया चिकमगलूर को स्वर्ण रजत एवं कांस्य पदक प्रदान किया गया।

वर्ष 2008–09 के जैन विद्या भाग 1 के **प्रवेशिका प्रथम वर्ष** की प्रथम श्रद्धा जैन, द्वितीय श्रेया चौपड़ा, तृतीय निकिता जीरावला गंगावती।

प्रवेषिका द्वितीय वर्ष में प्रथम कुणाल जैन लेकटाउन, द्वितीय प्रांजल बोरड़ कांकरिया मणिनगर, तृतीय साक्षी बंसल सिवानीमण्डी। **विशारद द्वितीय वर्ष** में प्रथम श्रीमती रश्मि धाड़ेवा चित्तौड़गढ़, द्वितीय चन्द्रप्रकाश सेठिया सरदारशहर, तृतीय राकेश चौरड़िया दक्षिण हावड़ा। **विशारद द्वितीय वर्ष** में प्रथम श्रीमती निधि सेठिया सोलापुर, द्वितीय श्रीमती सरस्वती कोठारी गदग, तृतीय सपना बुचा जोरावरपुरा। **रत्न प्रथम वर्ष** में प्रथम श्रीमती सुमन कोठारी काठमाण्डू, द्वितीय आरती राखेचा इरोड़, तृतीय श्रीमती रेखा बरड़िया पाली। **रत्न द्वितीय वर्ष** में प्रथम श्रीमती संतोष वडेरा टापरा, द्वितीय दीक्षा जैन राजगढ़, तृतीय श्रीमती रेखा संखलेचा मालेगावं। **रत्न तृतीय वर्ष में** प्रथम श्रीमती रूपा गादिया बैंगलोर, द्वितीय सुमन पोरवाल बैंगलोर, तृतीय अलका दूगड़ पड़िहारा। **विज्ञ प्रथम वर्ष** में प्रथम आरती चौपड़ा नोखा, द्वितीय सपना पारख गंगाशहर, तृतीय पद्मा पिरोदिया पल्लावरम।

सम्पूर्ण देश के केन्द्रों में उल्लेखनीय परिणाम देने वाले केन्द्र 2007–08 में अवरचल विजयोपहार प्रथम उधना, द्वितीय हिन्दमोटर। प्रवरचल विजयोपहार प्रथम में जसोल, द्वितीय आसीन्द को दिया गया।

2008–09 में अवरचल विजयोपहार प्रथम लेकटाउन (कोलकाता), द्वितीय कोटा। प्रवरचल विजयोपहार प्रथम में दक्षिण हावड़ा, द्वितीय नोखा को दिया गया।

आंचलिक संयोजकों में सर्वोत्कृष्ट योगदान देने वाले संयोजकों को में प्रथम महावीर धाड़ीवाल (झालना अंचल), द्वितीय नरेन्द्र माण्डोत (अहमदाबाद अंचल) तृतीय संपतराम सुराणा (चुरू अंचल) को भी निदेशक जिनेन्द्र कोठारी ने सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार एवं नागौर–बीकानेर के आंचलिक संयोजक महेन्द्र संचेती ने किया।

जैन विद्या विकास के लिए हुआ गहन मंथन

संकाय 2010 में आयेगा जैन विद्या बोर्ड की भूमिका में

लाडनूं, 13 जून।

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय के द्वारा आयोजि आंचलिक संयोजक कार्यशाला में देश के 25 अंचलों से आए आंचलिक संयोजकों केन्द्र व्यवस्थापकों एवं विज्ञ उपाधि धारक विद्यार्थियों के साथ संचालक समितियों ने जेन विकास हेतु गहन चिंतन मंथन किया। आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के इंगितानुसार संकाय को 2010 के जुलाई माह में जैन विद्या बोर्ड के रूप में स्थापित करने पर विचार किया गया।

संकाय के राष्ट्रीय निदेशक जिनेन्द्र कोठारी ने बताया कि मुनि जयंतकुमार के निर्देशन में चलने वाली इस कार्यशाला के विभिन्न क्षत्रों में मुनि महेन्द्रकुमार, मुनि मोहजीतकुमार, मुनि कुमार श्रमण, सुश्री वीणा जैन, डॉ. मुमुक्षु शांता जैन ने विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जैन विद्या के प्रथम दो वर्षिय पाठ्यक्रम को इसी वर्ष में अंग्रेजी में उपलब्ध कराया जायेगा।

जिनेन्द्र कोठारी ने बताया कि संकाय ने लक्ष्य 2015 का निर्धारण किया है। जिसमें 15 हजार विद्यार्थियों को जैन विद्या पाठ्यक्रम से जोड़े जाने पर जोर दिया गया है। संकाय के आंचलिक संयोजक जैन विद्या विकास हेतु अपने अंचल स्तर पर कार्यशालाओं एवं व्याख्यानमालाओं का आयोजन करेंगे।

कार्यशाला में विभागाधिपति रतनलाल चौपड़ा समारोह के प्रायोजक मालचन्द बैंगानी विशेष रूप से उपस्थित थे। इस दौरान आंचलिक संयोजक निलेश बैद द्वारा तैयार निर्देशिका का विमोचन किया गया एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले आंचलिक संयोजक राजकुमार फतावत, महेन्द्र संचेती, सुरेन्द्र सेठिया, प्रदीप बोथरा, श्रीमती मधुदेरासरिया, निलेश बैद, सुरेश नाहटा, श्रीमती विमला कोठारी, डालचन्द बैद, संजय जैन, सुशील बाफना तथा प्रशंसनीय कार्य करने वाले आंचलिक संयोजक शांतिलाल भंसाली, अशोक डूंगरवाल, विमल ओसवाल, श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया एवं सुनील भंडारी का सम्मान किया गया।

आज होगा 13वां जैन विद्या दीक्षांत समारोह

लाडनूं, 13 जून।

नागौर–बीकानेर के आंचलिक संयोजक महेन्द्र संचेती ने बताया कि आज (14 जून) दोपहर 2 बजे आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 13वां जैन विद्या दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाएगा। जिसमें चुरू जिला कलेक्टर के.के. पाठक, एवं बीकानेर के सांसद अर्जुनराम मेघवाल विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। उन्होंने बताया कि इस समारोह में जैन विद्या विज्ञ परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को विज्ञ उपाधी प्रदान की जायेगी।